तुम बिल्कुल हम जैसे निकले

फहमीदा रियाज, पाकिस्तान की मशहूर शायरा

तुम बिल्कुल हम जैसे निकले
अब तक कहाँ छिपे थे भाई
वो मूरखता, वो घामड़पन
जिसमें हमने सदी गंवाई
आखिर पहुँची द्वार तुम्हारे
अरे बधाई, बहुत बधाई।

प्रेत धर्म का नाच रहा है
कायम हिंदू राज करोगे ?
सारे उल्टे काज करोगे !
अपना चमन ताराज़ करोगे !

तुम भी बैठे करोगे सोचा
पूरी है वैसी तैयारी
कौन है हिंदू, कौन नहीं है
तुम भी करोगे फ़तवे जारी
होगा कठिन वहाँ भी जीना
दाँतों आ जाएगा पसीना
जैसी तैसी कटा करेगी
वहाँ भी सब की साँस घुटेगी
माथे पर सिंदूर की रेखा
कुछ भी नहीं पड़ोस से सीखा!

क्या हमने दुर्दशा बनाई
कुछ भी तुमको नजर न आयी ?
कल दुख से सोचा करती थी
सोच के बहुत हँसी आज आयी
तुम बिल्कुल हम जैसे निकले
हम दो कौम नहीं थे भाई।
मश्क करो तुम, आ जाएगा
उल्टे पाँव चलते जाना
ध्यान न मन में दूजा आए
बस पीछे ही नजर जमाना
भाड़ में जाए शिक्षा-विक्षा
अब जाहिलपन के गुन गाना।

आगे गड्ढा है यह मत देखो
लाओ वापस, गया ज़माना
एक जाप सा करते जाओ
बारम्बार यही दोहराओ
कैसा वीर महान था भारत
कैसा आलीशान था-भारत
फिर तुम लोग पहुँच जाओगे
बस परलोक पहुँच जाओगे
हम तो हैं पहले से वहाँ पर
तुम भी समय निकालते रहना
अब जिस नरक में जाओ वहाँ से
चिट्ठी-विट्ठी डालते रहना।

इति श्री लोकतंत्र कथा: कोई सवाल नहीं, क्योंकि पहले पड़ोसी को हराना है!

व्यंग्य

भूपेश पंत

चक्रवर्ती सम्राट अपनी आरामगाह में अपना सबसे प्रिय चैनल देख रहे हैं जिसे अंग्रेजीदां रिपब्लिक को बनाना कहते हैं। चैनल में उनका अति प्रिय कार्यक्रम 'भक्तों में है दम' चल रहा है। एंकर ने एक भक्त को अपने साथ बिठा लिया है जबकि अपने टूटे फूटे घर से लाइव चीथड़ों में लिपटी जनता दर्द से कराह रही है। आज सुबह उस पर किसी मवाली ने राज्य द्रोही बोल कर हमला किया था। बाद में सीमा पर लड़ने जाने की पेशकश कर उसने खुद को राज्य भक्त साबित कर दिया। जनता ने ये भी सुना है कि सीमा पर राज्य के दर्जनों जांबाज एक बार फिर आतंकी हमले में खेत रहे। जब से अंदर से कलेजा कटा है तब से उसे अपना बाहरी दर्द बहुत छोटा लगने लगा है। लेकिन जिन बुनियादी सवालों पर चैनल ने कार्यक्रम तय किया है उसे तो उन्हें पूछना ही होगा। उसकी तैयारी की मजबूरी जो है।

एंकर- 'तो मेरी प्यारी जनता। जैसा कि तुम जानती ही हो भक्त हमारे बगल में विराजमान हैं। उनका कहना है कि सम्राट ही राज्य हैं और राज्य आपसे जानना चाहता है कि जब सुरक्षा बलों पर हमला हो रहा था तब तुम क्या कर रहे थे ?'

जनता (हेडफोन को कान में खोंसते हुए) - 'देखिये.. मैं उस चुनावी रैली में थी जहां सम्राट सबको बता रहे थे कि उनका फिर से चुन कर आना राज्य की सुरक्षा के लिये क्यों ज़रूरी है।'

भक्त - 'देखा... ये राज्य द्रोही है। जब पूरा राज्य आतंकी हमले से सदमे और आक्रोश में था तब ये रैलियों में ताली बजा रही थी।'

जनता - 'लेकिन आपके हिसाब से तो मैं उस वक्त अपने राज्य के साथ ही खड़ी थी।'

भक्त - 'देख लिया आपने, मैं यही बताना चाह रहा हूँ बुनियादी सवाल पूछने वाले द्रोहियों को कि आतंकी हमले के बाद पूरा राज्य सम्राट के साथ खड़ा है।'

जनता - 'लेकिन अभी तो आपने बोला कि सम्राट ही राज्य हैं...'

भक्त (कुढ़ते हुए) - 'वही तो कह रहा हूँ मूर्ख! कि सम्राट हमेशा अपने साथ खड़े रहते हैं चाहे वो चुनावी रैलियां हों या युद्ध का मैदान।'

जनता - 'लेकिन कुछ देर पहले तो आप कह रहे थे कि पूरा राज्य सीमा पर जवानों के साथ खड़ा है। तो फिर बताओ कि राज्य तो सम्राट के साथ खड़ा है लेकिन सम्राट राज्य के साथ क्यों नहीं खड़े दिखते ?'

भक्त (एंकर से) - 'देखा आपने! ये कितने सवाल पूछ रही है वो भी शोक की इस घड़ी में। ये राज्य द्रोही है SS... । अबे तुझे भी बांध कर पड़ोस में फेंक देना चाहिये ताकि वहीं अपने सवालों के बम फोड़ती फिरे।'

जनता - 'लेकिन वहां तो पहले से ही मुझ जैसी दीन हीन फटेहाल जनता अपने राजा से सवाल पूछ रही है कि आतंक की खेती कब तक ?'

भक्त सकपकाते हुए - 'तो सम्राट भी कोई कम तो नहीं हैं। होगी उनकी भी कोई कूटनीति। वैसे भी वो बिना दूरदृष्टि के कोई काम नहीं करते। जो भी करते हैं गज़ब करते हैं।'

जनता (एंकर से) - 'आपने तो ये पंचवर्षीय कार्यक्रम बुनियादी सवालों को उठाने के लिये किया था न तो अब इसे जनता की अदालत क्यों बना रहे हैं ?'

एंकर (तनतनाते हुए) - 'हम वही कर रहे हैं जो सम्रा.. सॉरी राज्य करवाना चाहता है। (भक्त से हामी भरवाने के बाद) ठीक है तुम सवाल पूछ सकती हो। भक्त इतने तक तो सहिष्णु हैं।

जनता - 'पहला सवाल जो हर बात के लिये मौजूँ है अर्ज़ करती हूँ एक शेर की शक्ल में... '

'तू इधर-उधर की बात न कर, ये बता कि काफिला क्यों लुटा, मुझे रहजनों से गिला नहीं, तेरी रहबरी पे सवाल है..'

भक्त - 'ये तो मेक इन राज्य यानी राज्य को बनाओ का शेर नहीं है। इसका तुझे जवाब नहीं मिलेगा। वैसे भी सम्राट को उसके अलावा कोई शेर पसंद नहीं।'

जनता - 'तो इस सवाल का जवाब कब मिलेगा कि सरकारी खजाना लुटा कर पड़ोसी राज्य से बना बुत क्यों लगाया ?'

भक्त - 'ये कोई सवाल नहीं, पहले पड़ोसी राज्य को हराना है।'

जनता - 'तो खाते में पंद्रह लाख ही डाल देते। कब डालोगे ?'

भक्त - 'पहले पड़ोसी राज्य को हराना है।'

जनता - राफेल भ्रष्टाचार की जाँच कब करोगे ?

भक्त - 'ये वक्त सवाल पूछने का नहीं, पहले पड़ोसी राज्य को हराना है।'

जनता - 'रोजगार, पेंशन, मंदिर.... '

भक्त - 'अब ये सब बाद में.. पहले पड़ोसी राज्य को हराना है।'

जनता (खीज कर)- 'और उसे हराने तक क्या करोगे ?'

भक्त - 'तुम जैसों को गरियाएंगे.. और क्या बे.. अब ये सब समस्याएं नहीं रहीं, बस कुछ चुनावी मुद्दे हैं और उसे जीत कर सम्राट बता देंगे कि ये मुद्दे नहीं विरोधियों के हवाई बम हैं। चुनाव जीत कर सम्राट साबित कर देंगे कि वो ही एकमात्र सत्य हैं। वो कभी गलत नहीं करते।'

एंकर - 'मुझे पता है भक्त की बात में 'दम' है।'

सम्राट मुस्कुराते हुए रिमोट को इशारा कर टीवी बंद करवाते हैं। तभी दरवाजे पर कुछ देर पहले ही नमूदार हुआ शाही विदूषक बोल पड़ता है।

विदूषक - 'वाह सम्राट वाह। मजा आया न।'

विदूषक के इस सवाल पर सम्राट यकायक ठहाका लगाते हैं और कुछ सोचने लगते हैं।

विदूषक - 'क्या हुआ सम्राट ? मैंने कुछ गलत पूछ लिया क्या ?'

सम्राट (हँसी रोकते हुए) - 'अरे नहीं, तुमने आज मुझे उस दिन की याद दिला दी जब मैंने तुमसे पूछा था कि सबसे ज्यादा मजा किस चीज में आता है ?'

विदूषक - 'जी सम्राट अभी कुछ दिन पहले की ही तो बात है। तब मैंने आपसे कहा था कि वक्त आने पर बताऊंगा।'

सम्राट-'याद है मुझे। उस दिन जब तुमने मुझे सुबह सुबह जहाज पर बुला लिया था और भ्रष्टाचार के भँवर ने हमें घेर लिया था। मैंने तो सुबह से शौच भी नहीं की थी। पेट में अजीब सी लहरें उठ रही थीं।'

विदूषक - 'और फिर आपने अचानक राज्य भक्ति की ऐसी लहर पैदा की जिसने हमारे जहाज को बीच भँवर से झटके में महल के सामने ला खड़ा किया।'

सम्राट - 'हां, और जब मैं निवृत्त होकर शौचालय से बाहर निकला तो तुमने सबसे पहले यही सवाल किया था, सम्राट !मजा आया ना।'

विदूषक-'बिल्कुल ठीक सम्राट, और आपने कहा था कि वाकई इस लहर में सबसे ज़्यादा मजा आया और इसका कोई तोड़ नहीं है।'

सम्राट और विदूषक हंसते हुए चुनावी रैलियां करने निकलते हैं। जनता सहमी सी अपनी झोपड़ी में आंसू बहाते हुए एफएम के चैनल बदल बदल कर राग मियां की तोड़ी, राग देश, राग दरबारी और राग माल खौंस सुन रही है।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

शिक्षा का व्यवसायीकरण

शिक्षा का उद्देश्य समाज कल्याणकारी होता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य उच्च कोटि का मानव दर्जा प्राप्त करता है। मानव ने अभी तक जितनी भी उपलब्धियाँ पाई है। वह सभी शिक्षा के कारण ही पाई हैं, शिक्षा हमें केवल उन्नति करना व धन कमाना ही नहीं सिखाती बल्कि इसका उद्देश्य मानव में संस्कारों का विकास करना भी होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा के माध्यम से मानव का सर्वांगीण विकास होता है। बच्चों में आध्यात्मिक गुण हो, वह इच्छाओं को वश में करना सीखे। उनमें नैतिक मूल्यों का भी समावेश हो यह सब तत्व उचित शिक्षा एवं अच्छे वातावरण से होता है परन्तु अब शिक्षा का व्यवसायीकरण होने लगा है। हम शिक्षा ग्रहण करते हैं ताकि हमें अच्छी नौकरी मिले और उस नौकरी से हमें अच्छा वेतन प्राप्त हो। जिससे हमारा आराम से गुजर बसर हो सके। हम जीवन में सभी सुख-सुविधाओं का भोग करें। राष्ट्र समाज या परिवार में क्या हो रहा है उसे कोई सरोकार नहीं है। हमारे द्वारा निर्मित वस्तु की गुणवत्ता हो या न हो परन्तु उससे हम धन अधिक से अधिक कमायें।

इस प्रकार से देखा जाए तो आज मनुष्य केवल स्वार्थ में जी रहा है और हर चीज़ में व्यवसायीकरण देख रहा है। इसका मुख्य कारण, आज शिक्षा का मूल उद्देश्य अब कहीं नज़र नहीं आता है क्योंकि हम केवल बच्चों को धन कमाने की ही शिक्षा देते हैं यदि धन कमाने का लक्ष्य रखते हैं तो बच्चा भी केवल धन कमाना और स्वयं की स्वार्थ पूर्ति को ध्यान में रखेगा। ऐसा बालक समाज, राष्ट्र और परिवार के लिए नहीं सोचेगा। बच्चों के पाठ्क्रम में किताबी शिक्षा के साथ-साथ इस प्रकार के विषयों को भी शामिल करना चाहिए जिससे कि बड़े होकर कठिन विषयों पर निर्णय लेते समय बुद्धि, विवेक व साहस का परिचय दें व उसके निर्णय में स्वयं की स्वार्थ पूर्ति न हो बल्कि वे अपने परिवार, राष्ट्र और समाज के लिए भी सोचें। तभी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सार्थक हो पायेगा।